

सोच-समझकर पैसे खर्च कीजिए

इस अभ्यास की मदद से आप . . .

▶ अपनी **ज़रूरतों** और **ख्वाहिशों** के बीच फर्क कर पाएँगे।

▶ तय कर पाएँगे कि आप पैसे **बचाएँगे** या **उड़ाएँगे**।

▶ सोच पाएँगे कि आप कोई चीज़ **अभी** खरीदेंगे या **बाद में**।



ज़रूरतें या ख्वाहिशें

खतरा: इनके बीच फर्क न पहचानना।

जिन चीज़ों की हम **ख्वाहिश** रखते हैं, उन्हें खरीदने में कोई बुराई नहीं। लेकिन सवाल है कि क्या हमें उन चीज़ों की सचमुच ज़रूरत है? बाइबल बताती है, 'पहचानो कि ज़्यादा अहमियत रखनेवाली बातें क्या हैं।'—फिलिप्पियों 1:10.

लिख लीजिए कि एक महीने में आपकी क्या-क्या ज़रूरतें और ख्वाहिशें होती हैं। सिर्फ ऐसी चीज़ें लिखिए जो आप **अपने पैसे** से खरीदेंगे।

ज़रा सोचिए: नौजवानों और कॉलेज विद्यार्थियों को पैसे के बारे में सलाह देनेवाली एक किताब बताती है, "कभी-कभी हमारी ज़रूरतों और ख्वाहिशों के बीच फर्क करना आसान नहीं। इसलिए जिन चीज़ों को हम ज़रूरतें समझते हैं, वे दरअसल हमारी ख्वाहिशें होती हैं और हम उनके बगैर भी रह सकते हैं।"

इसे ध्यान में रखते हुए क्या आप कुछ चीज़ों को "ज़रूरतों" की सूची में से निकालकर "ख्वाहिशों" की सूची में डालेंगे?

महीना

.....

ज़रूरतें

(ज़रूरत की चीज़ें जिनका खर्च **आप** उठाते हैं, न कि आपके माँ-बाप)

ख्वाहिशें

(मनोरंजन, घूमने-फिरने या **पसंद** की कोई चीज़ खरीदने में पैसे खर्च करना)

बचाएँ या उड़ाएँ

खतरा: हद-से-ज़्यादा खर्च करना।



“यह सच है कि सेल पर कोई चीज़ खरीदने से मैं थोड़े-बहुत पैसे बचा सकती हूँ, लेकिन वह चीज़ न खरीदने से मैं पूरे पैसे बचा सकती हूँ।”—डानियेल

चीज़

कीमत

_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____

कुल मिलाकर
कितना खर्च हुआ

▶

हिसाब लगाइए कि अगर आप गैर-ज़रूरी चीज़ों या कामों पर कम खर्च करें, तो एक महीने में कितना बचा पाएँगे।



इसका 12 गुना कीजिए, फिर आपको पता चलेगा कि आप साल-भर में कितने पैसे बचा पाएँगे।

x12
=

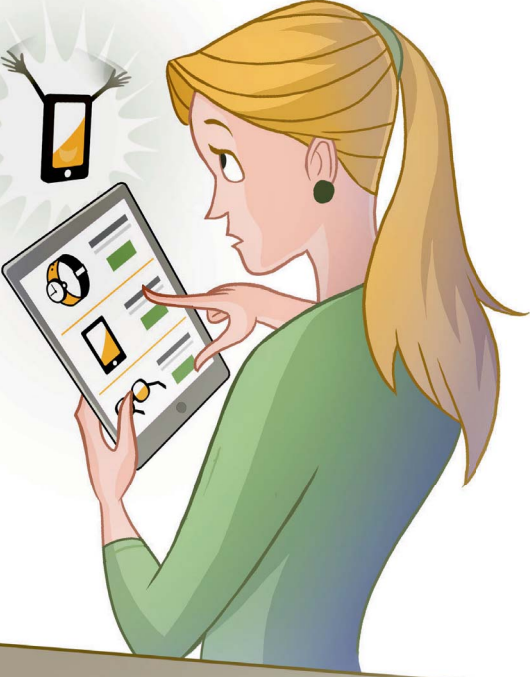
“अगर कोई चीज़ सस्ते दाम में बिक रही है और उसे खरीदकर आप कुछ पैसे बचा सकते हैं, तो इसमें शर्म की कोई बात नहीं! बचे हुए पैसों से आप दूसरी ज़रूरतें और खाहिशें पूरी कर सकते हैं।”—मेरी जेब खाली है! पैसों के बारे में सलाह देनेवाली किताब।

ज़रा सोचिए: बाइबल बताती है, “जिसे मौज-मस्ती से प्यार है, वह कंगाल हो जाएगा।” (नीतिवचन 21:17) मनोरंजन के बारे में आपका जो नज़रिया है, उससे कैसे तय होता है कि आप कितना पैसा खर्च करेंगे?

अभी या बाद में

खतरा: बिना सोचे-समझे खरीदारी करना।

“अगर मैं कुछ खरीदना चाहती हूँ, तो पहले मैं कुछ हफ्तों तक इंतज़ार करती हूँ। फिर मैं देखती हूँ कि क्या मुझे अब भी वह चीज़ चाहिए और क्या मैं उसका अच्छा इस्तेमाल करूँगी?”
—अलाना



आप शायद कब बिना सोचे-समझे खरीदारी करें?

- जब आप इंटरनेट पर कुछ देख रहे होते हैं
- जब आप दोस्तों के साथ होते हैं
- जब आपका मूड खराब होता है
- जब आपको तनख्वाह या जेबखर्च मिलता है

कोई बड़ी खरीदारी करने से पहले इंतज़ार करने के क्या-क्या फायदे होते हैं, उन्हें लिखिए।

ज़रा सोचिए: फिज़ूल खर्च से बचने के लिए आप कौन-से लक्ष्य रख सकते हैं?

महीने का मेरा बजट

बजट बनाने से आप सोच-समझकर पैसे खर्च करेंगे।

पहले कॉलम में लिखिए कि महीने के दौरान आपको कहाँ-कहाँ से पैसे मिलेंगे। दूसरे कॉलम में बताइए कि आप वे पैसे किन चीज़ों पर खर्च करने की सोच रहे हैं। तीसरे कॉलम में लिखिए कि आपने असल में कितने पैसे खर्च किए।

कहाँ से मिला

कितना खर्च करेंगे

कितने खर्च हुए

जेबखर्च



खाना-पीना

.....

.....
.....
.....



कपड़े

.....

.....
.....
.....



फोन

.....

.....



मनोरंजन

.....

.....
.....
.....



दान

.....

.....
.....
.....



जमा-पूँजी

.....

.....



घर के खर्चे

.....

.....

कुल

कुल

कुल